

महात्मा गांधी के भारतीय राजनीतिक अहिंसा संबंधी विचार

डा० अरविन्द कुमार शुक्ल¹

¹सहायक प्रोफेसर राजनीति विज्ञान, राजकीय महिला स्ना० महाविद्यालय बिंदकी, फतेहपुर उ०प्र०, भारत

Received: 20 January 2025 Accepted & Reviewed: 25 January 2025, Published : 31 January 2025

Abstract

महात्मा गांधी, जिन्हें बापू और राष्ट्रपिता के नाम से जाना जाता है, भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के सबसे प्रमुख नेताओं में से एक थे। वे केवल एक राजनीतिक नेता ही नहीं, बल्कि एक सामाजिक सुधारक और आध्यात्मिक प्रेरक भी थे। उन्होंने अपने जीवनभर अहिंसा और सत्याग्रह के सिद्धांतों का पालन किया और पूरी दुनिया को यह संदेश दिया कि बिना हिंसा के भी बड़े से बड़े परिवर्तन किए जा सकते हैं। उनका यह विचार आज भी प्रासंगिक है और अनेक सामाजिक तथा राजनीतिक आंदोलनों में प्रेरणा का स्रोत बना हुआ है।

महात्मा गांधी भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के महान नेता और विश्व में अहिंसा के सबसे बड़े प्रवर्तक माने जाते हैं। उनका संपूर्ण जीवन सत्य, अहिंसा और सामाजिक न्याय के सिद्धांतों पर आधारित था। भारतीय राजनीति में अहिंसा का विचार एक महत्वपूर्ण विषय है, जिसने न केवल भारत बल्कि विश्वभर में सामाजिक और राजनीतिक आंदोलनों को प्रभावित किया। गांधीजी का यह विचार भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की आत्मा बना और भारत को अंग्रेजों की दासता से मुक्त कराने में एक प्रमुख रणनीति के रूप में उभरा।

शब्द कुंजी— राजनीतिक विचारक, महात्मा गांधी, भारतीय राजनीतिक विचार, सत्य, अहिंसा, सामाजिक न्याय

Introduction

मोहनदास करमचंद महात्मा गांधी का जन्म 2 अक्टूबर 1869 को पोरबंदर, गुजरात में हुआ था। उनका पूरा नाम मोहनदास करमचंद गांधी था। वे एक मध्यमवर्गीय परिवार में जन्मे और उनके पिता करमचंद गांधी पोरबंदर के दीवान थे। उनकी माता पुतलीबाई धार्मिक प्रवृत्ति की महिला थीं, जिन्होंने गांधीजी पर गहरा प्रभाव डाला। गांधीजी ने इंग्लैंड में बैरिस्टरी की पढ़ाई की और दक्षिण अफ्रीका में नस्लीय भेदभाव के खिलाफ संघर्ष किया। यहीं से उन्होंने सत्य और अहिंसा के सिद्धांतों को अपनाया और भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में इनका व्यापक प्रयोग किया और वहीं से अहिंसा और सत्याग्रह के अपने सिद्धांतों को विकसित किया।

अहिंसा का अर्थ और गांधी जी की व्याख्या— महात्मा गांधी के अनुसार अहिंसा का सामान्य अर्थ है — किसी भी प्रकार की हिंसा न करना। गांधी जी के अनुसार, अहिंसा केवल शारीरिक हिंसा से बचने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह मन, वचन और कर्म से किसी को भी कष्ट न पहुँचाने का सिद्धांत है। उन्होंने इसे सत्य से जोड़ते हुए कहा कि अहिंसा और सत्य एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। महात्मा गांधी ने भारत के स्वतंत्रता संग्राम में अहिंसा और सत्याग्रह को अपने प्रमुख हथियार के रूप में इस्तेमाल किया।

महात्मा गांधी और अहिंसा— महात्मा गांधी ने अहिंसा को एक व्यापक दर्शन के रूप में प्रस्तुत किया, जिसमें केवल शारीरिक हिंसा से बचना ही नहीं, बल्कि मन, वचन और कर्म से किसी भी प्रकार की हिंसा न करने

की सीख दी गई। गांधीजी के अनुसार, अहिंसा केवल शारीरिक हिंसा से बचने का नाम नहीं, बल्कि यह मानसिक और आत्मिक शुद्धता का भी प्रतीक है। उनके अनुसार, सत्य और अहिंसा एक-दूसरे के पूरक हैं, गांधीजी मानते थे कि बिना सत्य के अहिंसा अधूरी है। प्रेम और करुणा का महत्व, अहिंसा का मूल आधार प्रेम और करुणा है, जो समाज में शांति और समरसता बनाए रखता है। सत्याग्रह, यह गांधीजी का प्रमुख हथियार था, जिसका अर्थ है सत्य की खोज के लिए आत्मबलिदान देना।

उन्होंने इसे भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का मुख्य आधार बनाया और सत्याग्रह, असहयोग आंदोलन, सविनय अवज्ञा आंदोलन तथा भारत छोड़ो आंदोलन जैसे आंदोलनों में अहिंसा का प्रयोग किया। उन्होंने निम्नलिखित प्रमुख आंदोलनों का नेतृत्व किया—

“चंपारण और खेड़ा सत्याग्रह (1917–1918)” – यह गांधी जी का पहला बड़ा आंदोलन था, जिसमें उन्होंने किसानों को ब्रिटिश अधिकारियों के शोषण से बचाने के लिए सत्याग्रह का सहारा लिया।

असहयोग आंदोलन (1920–22)— गांधीजी ने ब्रिटिश शासन के खिलाफ असहयोग आंदोलन चलाया, जिसमें विदेशी वस्त्रों का बहिष्कार, सरकारी नौकरियों से इस्तीफा और ब्रिटिश संस्थानों से दूरी बनाने का आह्वान किया गया। यह आंदोलन पूर्ण रूप से अहिंसक था और भारतीयों ने इसमें बढ़-चढ़कर भाग लिया।

दांडी यात्रा और सविनय अवज्ञा आंदोलन (1930)— गांधीजी ने ब्रिटिश सरकार के नमक कानून के विरोध में 12 मार्च 1930 को साबरमती आश्रम से दांडी तक 240 मील लंबी यात्रा निकाली। इस यात्रा में हजारों भारतीय शामिल हुए और नमक कानून तोड़कर अंग्रेजों के खिलाफ अहिंसक विरोध प्रदर्शन किया।

भारत छोड़ो आंदोलन (1942)— 8 अगस्त 1942 को गांधीजी ने अंग्रेजों भारत छोड़ो आंदोलन की घोषणा की और करो या मरो का नारा दिया। यह आंदोलन भी अहिंसा पर आधारित था, लेकिन ब्रिटिश सरकार ने इसे दबाने के लिए बल प्रयोग किया।

अहिंसा के प्रभाव और वैश्विक मान्यता— महात्मा गांधी के अहिंसा के सिद्धांत ने न केवल भारत, बल्कि पूरी दुनिया को प्रभावित किया। अमेरिका में मार्टिन लूथर किंग जूनियर ने गांधी जी से प्रेरणा लेकर नागरिक अधिकार आंदोलन चलाया। दक्षिण अफ्रीका में नेल्सन मंडेला ने भी अहिंसा के मार्ग पर चलकर रंगभेद नीति के खिलाफ संघर्ष किया।

गांधी जी के विचारों की वर्तमान प्रासंगिकता— आज के युग में जब विश्वभर में हिंसा और अशांति का वातावरण है, गांधी जी के अहिंसा के सिद्धांत पहले से अधिक प्रासंगिक हो गए हैं। सामाजिक, राजनीतिक और व्यक्तिगत जीवन में अहिंसा का पालन करके ही हम एक शांतिपूर्ण समाज की स्थापना कर सकते हैं। महात्मा गांधी को अहिंसा का सबसे बड़ा प्रवर्तक माना जाता है, क्योंकि उन्होंने इसे केवल एक नैतिक सिद्धांत के रूप में नहीं, बल्कि एक प्रभावी राजनीतिक हथियार के रूप में प्रयोग किया। हालाँकि, अहिंसा का विचार प्राचीन भारतीय परंपरा में गहराई से निहित है। बौद्ध धर्म के प्रवर्तक गौतम बुद्ध और जैन धर्म के 24वें तीर्थंकर महावीर स्वामी ने भी अहिंसा को अपने उपदेशों का मूल सिद्धांत बनाया था।

अन्य प्रमुख अहिंसा प्रवर्तक—

गौतम बुद्ध— करुणा और अहिंसा के संदेशवाहक, जिन्होंने अहिंसा परमो धर्म के सिद्धांत को बढ़ावा दिया।

भगवान महावीर – जैन धर्म में अहिंसा को सबसे महत्वपूर्ण नैतिक मूल्य माना गया, जो सभी जीवों के प्रति करुणा और दया पर बल देता है।

मार्टिन लूथर किंग जूनियर – अमेरिका में नागरिक अधिकार आंदोलन में अहिंसा का पालन किया।

नेल्सन मंडेला – दक्षिण अफ्रीका में रंगभेद के खिलाफ अहिंसक संघर्ष किया।

दलाई लामा – तिब्बत में चीनी शासन के विरुद्ध अहिंसक प्रतिरोध के प्रमुख समर्थक।

गांधीजी की आलोचना और चुनौतियाँ— महात्मा गांधी एक महान नेता थे, लेकिन उनके विचारों और कार्यों की आलोचना भी हुई और उन्होंने कई चुनौतियों का सामना किया। यहाँ कुछ प्रमुख आलोचनाएँ और चुनौतियाँ दी गई हैं—

1. “चरम अहिंसा का पालन” – गांधीजी के अहिंसा और सत्याग्रह के सिद्धांत की कई बार आलोचना हुई। कुछ लोगों का मानना था कि अहिंसा की उनकी नीति के कारण भारतीयों को कई बार अन्याय सहना पड़ा।
2. “भगत सिंह और क्रांतिकारियों के प्रति रुख”— गांधीजी ने क्रांतिकारी आंदोलनों, जैसे कि भगत सिंह, चंद्रशेखर आज़ाद और नेताजी सुभाष चंद्र बोस के विचारों का समर्थन नहीं किया। कई लोग मानते हैं कि यदि गांधीजी चाहते तो भगत सिंह की फांसी रुकवा सकते थे।
3. “खिलाफत आंदोलन का समर्थन” – गांधीजी ने खिलाफत आंदोलन का समर्थन किया, जिसका उद्देश्य तुर्की के खलीफा को बचाना था। इस कारण कई हिंदू नेताओं ने उनकी आलोचना की क्योंकि उनका मानना था कि यह एक धार्मिक मुद्दा था और भारत के स्वतंत्रता संग्राम से इसका कोई लेना-देना नहीं था।
4. “पूंजीपतियों के प्रति नरम रवैया” – गांधीजी का टाटा, बिड़ला जैसे उद्योगपतियों से अच्छा संबंध था। कुछ समाजवादी और वामपंथी विचारकों ने इसे पूंजीपतियों के प्रति नरम रवैया बताया और उनकी आलोचना की।
5. “पाकिस्तान के निर्माण को स्वीकार करना” – गांधीजी ने मुस्लिम लीग और कांग्रेस के बीच समझौता करने की कोशिश की, लेकिन अंततः पाकिस्तान बना। कुछ राष्ट्रवादी नेताओं ने उन पर भारत के विभाजन को रोकने में असफल रहने का आरोप लगाया।
6. “दलितों के लिए सीमित सुधार” – डॉ. भीमराव अंबेडकर और अन्य दलित नेताओं का मानना था कि गांधीजी ने दलितों के अधिकारों के लिए पर्याप्त प्रयास नहीं किए। वे अस्पृश्यता के खिलाफ थे, लेकिन वर्ण व्यवस्था को पूरी तरह समाप्त करने के पक्ष में नहीं थे।

चुनौतियाँ—

1. “ब्रिटिश सरकार का दमन”— ब्रिटिश सरकार ने कई बार गांधीजी और उनके आंदोलनों को दबाने की कोशिश की। उन्हें कई बार जेल में डाला गया, लेकिन वे अपने संघर्ष से पीछे नहीं हटे।
2. “असहयोग आंदोलन की वापसी” – 1922 में चौरी चौरा कांड के बाद, जब गांधीजी ने असहयोग आंदोलन को वापस ले लिया, तो उनके कई समर्थकों और नेताओं ने इसकी आलोचना की।

3. “द्वितीय विश्वयुद्ध और भारत छोड़ो आंदोलन” – 1942 में भारत छोड़ो आंदोलन शुरू करने पर ब्रिटिश सरकार ने गांधीजी को गिरफ्तार कर लिया। यह एक कठिन समय था जब कांग्रेस का नेतृत्व जेल में था और आंदोलन दबा दिया गया था।

4. “हिंदू-मुस्लिम एकता की चुनौती” – गांधीजी हमेशा हिंदू-मुस्लिम एकता के पक्षधर रहे, लेकिन उन्हें कई बार दोनों पक्षों से विरोध झेलना पड़ा। विभाजन के समय हुए दंगों में उन्होंने उपवास करके शांति स्थापित करने की कोशिश की, लेकिन कई हिंदू राष्ट्रवादियों ने उन पर मुस्लिम तुष्टिकरण का आरोप लगाया।

5. “नाथूराम गोडसे द्वारा हत्या” – 30 जनवरी 1948 को नाथूराम गोडसे ने गांधीजी की हत्या कर दी। गोडसे और उनके समर्थकों का मानना था कि गांधीजी का रवैया हिंदुओं के खिलाफ और पाकिस्तान के पक्ष में था।

गांधीजी की आलोचना के बावजूद, उनके योगदान को नकारा नहीं जा सकता। उन्होंने सत्य, अहिंसा और मानवता के सिद्धांतों पर जोर दिया और भारत को स्वतंत्रता दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। हालांकि गांधीजी के अहिंसा सिद्धांत को व्यापक समर्थन मिला, लेकिन इसे आलोचना का भी सामना करना पड़ा। कुछ लोग मानते थे कि अहिंसा की नीति ब्रिटिश सरकार के खिलाफ प्रभावी नहीं होगी और हिंसक क्रांति अधिक प्रभावी हो सकती थी। भगत सिंह और सुभाष चंद्र बोस जैसे क्रांतिकारियों ने अपने-अपने तरीकों से स्वतंत्रता संग्राम लड़ा।

महात्मा गांधी के विचार आज भी पूरी दुनिया में प्रासंगिक हैं, क्योंकि उन्होंने सत्य, अहिंसा, समाजिक न्याय और आत्मनिर्भरता जैसी सार्वभौमिक मान्यताओं पर जोर दिया। वर्तमान समय में गांधीवादी विचारों की प्रासंगिकता को विभिन्न पहलुओं से समझा जा सकता है।

आज की दुनिया में बढ़ती हिंसा, आतंकवाद और युद्ध के माहौल में गांधी जी का अहिंसा का सिद्धांत पहले से अधिक महत्वपूर्ण हो गया है। वैश्विक स्तर पर शांति और सह-अस्तित्व के लिए यह एक प्रभावी मार्गदर्शक हो सकता है। राजनीति, व्यापार और व्यक्तिगत जीवन में नैतिक पतन देखने को मिल रहा है। ऐसे में गांधी जी का सत्य और नैतिकता पर जोर देना, ईमानदारी और पारदर्शिता को बढ़ावा देने के लिए अत्यंत आवश्यक है। ग्लोबलाइजेशन के दौर में भी गांधी जी का स्वदेशी आंदोलन और आत्मनिर्भरता का विचार ‘मेक इन इंडिया’ और ‘वोकल फॉर लोकल’ जैसी नीतियों में झलकता है। आत्मनिर्भर भारत की अवधारणा गांधीवादी विचारधारा से प्रेरित है। गांधी जी का सादा जीवन और उच्च विचार का सिद्धांत आज के उपभोक्तावाद और पर्यावरणीय संकट के समाधान के रूप में देखा जा सकता है। स्थायी विकास और प्रकृति के प्रति सम्मान की भावना को अपनाकर हम जलवायु परिवर्तन जैसी चुनौतियों से निपट सकते हैं।

आज भी ग्रामीण विकास और विकेंद्रीकरण की जरूरत है। गांधी जी का ग्राम स्वराज का सपना स्थानीय शासन को मजबूत करने और आत्मनिर्भर गाँवों के निर्माण पर आधारित था, जो आज भी विकासशील देशों के लिए आवश्यक है। जातिवाद, धार्मिक कट्टरता और सामाजिक असमानता आज भी बड़ी समस्याएँ हैं। गांधी जी के विचार समाज में समरसता और समानता स्थापित करने के लिए मार्गदर्शक हो सकते हैं। आज के लोकतांत्रिक समाज में शांतिपूर्ण विरोध और सत्याग्रह के माध्यम से अन्याय के खिलाफ लड़ने का गांधीवादी तरीका अब भी प्रभावी है।

महात्मा गांधी के विचार समय और परिस्थितियों के अनुसार बदलते समाज के लिए आज भी प्रासंगिक हैं। अहिंसा, सत्य, स्वावलंबन, पर्यावरण संरक्षण और सामाजिक समानता के सिद्धांत आज की चुनौतियों का समाधान देने में सक्षम हैं। इसलिए, गांधीवाद को केवल इतिहास की बात न मानकर, उसे वर्तमान जीवन में अपनाने की आवश्यकता है। आज के युग में जब विश्वभर में हिंसा और अशांति का वातावरण है, गांधी जी के अहिंसा के सिद्धांत पहले से अधिक प्रासंगिक हो गए हैं। सामाजिक, राजनीतिक और व्यक्तिगत जीवन में अहिंसा का पालन करके ही हम एक शांतिपूर्ण समाज की स्थापना कर सकते हैं। महात्मा गांधी केवल एक नेता ही नहीं, बल्कि एक विचारधारा थे। उन्होंने पूरी दुनिया को यह सिखाया कि अहिंसा केवल एक नैतिक मूल्य नहीं, बल्कि एक सशक्त राजनीतिक और सामाजिक हथियार भी है। उनका जीवन और उनके सिद्धांत आज भी मानवता के मार्गदर्शक बने हुए हैं।

महात्मा गांधी का अहिंसा विचार भारतीय राजनीति में एक महत्वपूर्ण योगदान रहा है। यह केवल स्वतंत्रता संग्राम तक सीमित नहीं रहा, बल्कि स्वतंत्र भारत के सामाजिक और राजनीतिक संरचना में भी इसकी गहरी छाप रही। आज भी गांधीजी के अहिंसा और सत्याग्रह के सिद्धांत संघर्ष, न्याय और मानवता के पक्षधर आंदोलनों के लिए प्रेरणास्रोत बने हुए हैं।

गांधीजी का जीवन और उनके विचार हमें यह सिखाते हैं कि अहिंसा केवल एक विचार नहीं, बल्कि एक जीवनशैली है, जो हमें शांति और सच्चाई के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देती है।

महात्मा गांधी केवल एक नेता ही नहीं, बल्कि एक विचारधारा थे। उन्होंने पूरी दुनिया को यह सिखाया कि अहिंसा केवल एक नैतिक मूल्य नहीं, बल्कि एक सशक्त राजनीतिक और सामाजिक हथियार भी है। उनका जीवन और उनके सिद्धांत आज भी मानवता के मार्गदर्शक बने हुए हैं।

संदर्भ सूची—

हिंद स्वराज या भारतीय स्वराज— यह पुस्तक महात्मा गांधी ने 1909 में लिखी थी, जिसमें उन्होंने आधुनिक सभ्यता की आलोचना और स्वराज की अवधारणा पर अपने विचार प्रस्तुत किए हैं। यह उनके राजनीतिक दर्शन को समझने के लिए महत्वपूर्ण स्रोत है।

दक्षिण अफ्रीका में सत्याग्रह— इस पुस्तक में गांधीजी ने दक्षिण अफ्रीका में अपने सत्याग्रह आंदोलनों का वर्णन किया है, जो अहिंसात्मक प्रतिरोध के उनके प्रयोगों का महत्वपूर्ण हिस्सा है।

सत्य के साथ मेरे प्रयोग— यह गांधीजी की आत्मकथा है, जिसमें उन्होंने अपने जीवन के विभिन्न पहलुओं, विशेषकर सत्य और अहिंसा के प्रति अपनी प्रतिबद्धता का वर्णन किया है।

अहिंसा पर गांधी— इस पुस्तक में गांधीजी के अहिंसा संबंधी विचारों का संग्रह है, जो उनके दृष्टिकोण को गहराई से समझने में सहायक है।

अहिंसक प्रतिरोध की शक्ति— चयनित लेखनरूप यह पुस्तक गांधीजी के अहिंसक प्रतिरोध के सिद्धांत और उसके विभिन्न पहलुओं पर उनके विचारों का संग्रह है।

मंगल प्रभात— यह पुस्तक गांधीजी के आश्रम में दिए गए उपदेशों का संग्रह है, जिसमें उन्होंने अहिंसा सहित ग्यारह व्रतों पर विस्तार से चर्चा की है।

गांधी, एम.के. – सत्य के प्रयोग (Autobiography: The Story of My Experiments with Truth)

गांधी, एम.के. – हिंद स्वराज (Hind Swaraj)

गांधी, एम.के. – *Key to Health* (स्वास्थ्य की कुंजी)

Kripalani, J.B. – *Gandhi: His Life and Thought*

Parekh, Bhikhu – *Gandhi's Political Philosophy: A Critical Examination*

Bondurant, Joan V. – *Conquest of Violence: The Gandhian Philosophy of Conflict*

Parel, Anthony J. – *Gandhi's Philosophy and the Quest for Harmony*

Gandhi and the Ethics of Nonviolence – Raghavan Iyer

Nonviolence as a Political Strategy: Gandhi's Vision and Its Relevance – Judith Brown

Gandhi's Nonviolence: Concept and Application – Dennis Dalton

गांधी रिसर्च फाउंडेशन – www.gandhifoundation.org

गांधी सेवा संघ – www.gandhiserve.org

The Collected Works of Mahatma Gandhi – www.gandhiheritageportal.org